ISSN 2229-6751

RUMINATIONS

A Peer-Reviewed Bi-Annual International Journal for Analysis and Research in Humanities and Social Sciences

Abstracted & Indexed at- Ulrich, U.S.A.

Approved by: UGC, New Delhi, Sr. No. 2108, Jr. No. 49164

SUPPLEMENTARY EDITION (DECEMBER, 2018)

Website: ruminationssociety.com

IMPACT FACTOR : 5.25

ICI WORLD of JOURNALS

COSMOS IMPACT FACTOR

Editor-in-Chief :
Dr. Ram Sharma

Members Editorial Board :
Dr. Elisabetta Marino, (University di Roma, Italy)
Dr. Carolyn Heising, (Iowa State University, Iowa, USA)
Dr. Andre Kukla, (University of Totanto, Canada)
Dr. Diane M. Rousseau, USA
Dr. Alberto Testa, Argentina
Frank Joussen, Germany
Dr. M. Rajaram, Government Arts College, Karur, Tamil Nadu, India

ISSN 2229-6751

41. "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग तथा अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन" 332
– डॉ. प्रेम पाल सिंह, धनन्जय कुमार

42. "उषा प्रियंवदा की कहानियों में स्त्री–पुरुष सम्बन्ध बदलाव" 337
– डॉ. सुरेन्द्र प्रताप यादव

43. "बीसवीं सदी के अन्तिम दशक में महिला हिन्दी उपन्यासकारों के चिन्तन की दिशाएं" 347
– डॉ. ... प्रकाश यादव

44. हिन्दी के ... उपन्यासों में स्त्री–पक्ष 353
– डॉ. ... यादव

45. "उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में प्रवासी भारतीय स्त्री का संघर्ष" 358
– डॉ. सन्ध्या यादव

46. पंचायती राज व्यवस्था : चुनौतियां एवं उपाय 368
– इन्द्र कुमार मीणा

47. वैदिक परम्परा एवं सूफी परम्परा में रहस्यवादी आध्यात्मिक प्रेम 376
– डॉ. जमील अहमद

48. समकालीन कवि धूमिल के काव्य में विद्रोह का स्वर 382
– डॉ. बिजेन्द्र कुमार

49. प्रेमचन्द की नैराश्य लीला किंवा समस्या 391
– डॉ. तेज नारायण ओझा, मनीता ठाकुर

50. नालन्दा के इतिहास एवम् कला का ऐतिहासिक महत्व 397
– जसवन्त सिंह साम्बा

51. तसलीमा नसरीन के मनोवैज्ञानिक साहित्य में नारी की स्थिति 402
– डॉ. रश्मि कौशिक

52. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव एक सांख्यिकीय अध्ययन 409
– डॉ. सुनील कुमार सेन, बिमला कौर

53. कृष्णानंद शर्मा 'शिशु' के उपन्यासों में नारी–चेतना 420
डॉ. बिजेन्द्र कुमार

54. मौखिक इतिहास स्रोत एवं लेखन 430
– डॉ. राकेश मोहन नौटियाल

55. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन 435
– डॉ. राजेश कुमार

कृष्णचंद्र शर्मा 'भिक्खु' के उपन्यासों में नारी–चेतना

डॉ. बिजेंद्र कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, राधा कृष्ण सनातन धर्म (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, कैथल, हरियाणा, पिन 136 027

भूमिका

हिंदी कथा–साहित्य का भारतीय समाज में विशेष महत्व है, क्योंकि साहित्य व्यक्तिगत न होकर सामाजिक होता है । समाज की प्रत्येक घटना को उजागर करके, भावी समाज के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करता है। भारतेंदु युग के गद्य साहित्य में समाज से जुड़ने का कार्य प्रारंभ कर दिया था। उस समय के गद्य में देशभक्ति का भाव ज्यादा था । लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत यह साहित्य आम आदमी के जीवन से जुड़ता चला गया। जिसमें यशपाल, मोहन राकेश, नागार्जुन, कमलेश्वर जैसे अनेक साहित्यकार हुए, उनमें से एक नाम है – कृष्णचंद्र शर्मा 'भिक्खु'। जिसे साहित्य जगत में भिक्खु के नाम से जाना जाता है। जिन्होंने लगभग 19 उपन्यासों की रचना की। उनके उपन्यासों से समाज के प्रत्येक वर्ग का चित्रण मिलता है। समाज का एक अभिन्न अंग है – नारी। जिसके बिना जीवन की कल्पना भी संभव नहीं है। इसलिए नारी के जीवन के प्रत्येक पहलू पर भी 'भिक्खु' ने लेखनी चलाई है। उसके सुख-दुःख, प्रेम-विद्रोह, देशभक्ति, कर्तव्य परायणता, संस्कार, मूल्य चेतना आदि का दर्शन गहराई से किया। उन्हें नारी मन का विशेषज्ञ भी कहा जाता है। प्रस्तुत शोध आलेख में उनके नारी-चेतना के भाव का अध्ययन किया जाएगा।

नारी चेतना : सामान्य परिचय

जैसा कि हम सब जानते है कि मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज के दो मुख्य बिंदु हैं – नर और नारी। सृष्टि के विकास क्रम में नर के समान नारी का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। नारी चेतनाप्रद शक्ति है जिसके अभाव में सारी क्रियाएं शून्य एवं चेतना सुप्त हो जाती है।

अतः नारी पुरुष की चेतना और विश्व का आधार है। जन्म देने की शक्ति के कारण उसका स्थान सर्वोत्तम है। इसलिए प्रस्तुत शोध आलेख के अध्ययन से पूर्व नारी और चेतना के अर्थ का अध्ययन आवश्यक है।

नारी एक स्त्रीलिंग शब्द है। रामस्वरूप शास्त्री में नारी शब्द के बारे में लिखा है 'नारी – सं. स्त्री (सं.) स्त्री, सीमंतिनी, यो (जो) – षा, यो (जो) षित (स्त्री.), अबला , वामा , वनिता, महिला, रामा, प्रिया।1

भारतीय परंपरा और हिंदू शास्त्रों में नारी को श्री कहा गया है नर के 'न' और 'र' दोनों ही वर्ण ह्रस्व है तथा नारी के दोनों ही दीर्घ। इससे द्योतित होता है कि नारी का स्थान नर से ऊँचा है। हमारे शास्त्रों में नारी को अर्धांगिनी कहा गया है। इससे भाषित होता है कि नारी को लेकर ही पुरुष पूर्णता प्राप्त करता है।'2

डॉ. सुषमा शुक्ला ने नारी को जाया यानी जन्मदात्री कहा है – "स्त्री के पत्नी रूप के लिए जाया शब्द का प्रयोग किया गया है। जाया जाया इसलिए है कि पुरुष स्वयं उसमें पुत्र रूप में जन्म लेता है।"3

इस प्रकार नारी हो सकती है जिससे स्वयं शिव शक्ति प्राप्त करता है।

'चेतना' शब्द अंग्रेजी शब्द 'कॉन्शियसनेस' (consionsness) का हिंदी पर्यायवाची है। 'कॉन्शियसनेस' कई अर्थों में प्रयुक्त होता है, किंतु इसकी उत्पति लैटिन भाषा से हुई है, जहां इसका अर्थ है –

'Knowing things together'4

अर्थात वस्तुओं का सामूहिक ज्ञान ही चेतना है। इसमें जानने की अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति को भी परिलक्षित किया जा सकता है।

भारतीय कोशकारों ने भी चेतना को परिभाषित करने के स्तुत्य प्रयास किए हैं। इसके कोशगत अर्थ को उद्घाटित करते, डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' लिखते हैं, – "बुद्धि, मनोवृत्ति, ज्ञानात्मक, स्मृति, सुधि, चेतनता, संज्ञा, होश, (हि. चन प्रत्यय), संज्ञा में होना, होश में आना।"5

डॉ. जयनाथ नलिन चेतना के बारे मे लिखते हैं, – "बोध, भाव और कर्म की समन्विति राशि है चेतना। चिंतन, अनुभूति और कर्म की प्रति और इनका प्रसार और विकास ही चेतना है।"6

इस प्रकार नारी चेतना का अर्थ हुआ वह नारी जिसके अंदर चिंतन, अनुभूति एवं कर्म का भाव हो, जो बुद्धि, स्मृति आदि से होश में रहकर सर्वहित का कार्य करे।

कृष्णचंद्र शर्मा 'भिक्खु' के उपन्यासों में नारी चेतना

भारत की सभ्यता एवं संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति रही है। और भारतीय